Journal
of the
Oriental Institute
M.S. University of Baroda
ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत छात्राध्यापकों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति जागरूकता:एक समीक्षा

प्रोफेसर सीमा रानी
प्राचार्या
दयानंद आर्य कन्या डिग्री कॉलेज
मुरादाबाद

छवि दिवाकर
शोधार्थी
दयानंद आर्य कन्या डिग्री कॉलेज
मुरादाबाद

सारांश

यूनाइटेड नेशन वर्ल्ड पापुलेशन प्रोस्पेक्ट्स के ताजा आंकड़ों के अनुसार भारत चीन को पीछे छोड़कर जनसंख्या की दृष्टि से विश्व में प्रथम स्थान पर पहुंच गया है। भारत की जनसंख्या अमेरिका जो दुनिया की तीसरी सबसे अधिक आबादी का घर है से चार गुना अधिक है। यूनाइटेड वर्ल्ड पापुलेशन प्रोस्पेक्ट्स, 2024 की रिपोर्ट के अनुसार भारत की जनसंख्या 145 करोड़ होने का अनुमान है। जो कि वर्ष 2050 तक 1.7 अरब तक पहुंचने के लिए तैयार है। जनसंख्या वृद्धि पर संयम अथवा नियंत्रण लगाने की दृष्टि से महान कवि **रवींद्रनाथ टैगोर ने कहा था कि "भारत जैसे क्षुदा पीड़ित देश में इतने बच्चों को जन्म देना जिसका समुचित पालन पोषण नहीं किया जा सकता है निर्दयता पूर्वक अपराध है।''** इसलिए जब तक देश का प्रत्येक नागरिक जनसंख्या परिदृश्य के बारे में जागरूक नहीं होगा तब तक जनसंख्या वृद्धि की इस गति को कम करना अत्यंत कठिन होगा। प्रत्येक व्यक्ति को जागरूक करना होगा कि अधिकांश समस्याएं जैसे खाद्य सामग्री की समस्या, आवास की समस्या, वस्त्र आपूर्ति की समस्या, बेरोजगारी, भुखमरी, निर्धनता, निरक्षरता, पर्यावरण प्रदूषण, मूल्यों में गिरावट, गुणवत्तापूर्ण जीवन का अभाव, स्वास्थ्य तथा चिकित्सा संबंधी सेवाओं की समस्यां, सार्वभौमिक तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अभाव आदि अनेक समस्याएं तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या का ही परिणाम है। जनसंख्या शिक्षा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उत्पन्न समस्याओं का समाधान करती है। जनसंख्या शिक्षा वर्तमान समाज की आवश्यकता है। इसलिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति को जनसंख्या शिक्षा के प्रति जागरूक कर उनमें उचित दृष्टिकोण को विकसित किया जाए और इस निरंतर बढ़ती जनसंख्या पर नियंत्रण स्थापित किया जाए। अतः प्रस्तुत पत्र में महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत छात्राध्यापकों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति जागरूकता के संदर्भ में पूर्व में किए गए अध्ययनों का समीक्षात्मक वर्णन करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द: जनसंख्या वृद्धि, जनसंख्या शिक्षा, पर्यावरण प्रदूषण, जागरूकता, अभिवृत्ति।

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

प्रस्तावना

जनसंख्या शिक्षा जैसा कि नाम से ही स्पष्ट होता है मानवीय शक्ति अथवा मानवीय संसाधनों से संबंधित शिक्षा। जनसंख्या शिक्षा एक शैक्षिक कार्यक्रम है जिसका संबंध जनसंख्या के आकार, वृद्धि अथवा ह्रास, संरचना, लैंगिक अनुपात तथा वैवाहिक आयु आदि के ज्ञान से है। जनसंख्या की वृद्धि और ह्रास के करणों, उनके सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों की जानकारी भी जनसंख्या शिक्षा के अंतर्गत ही दी जाती है। जनसंख्या शिक्षा जीवन स्तर को उच्च बनाने तथा सुखी एवं गुणवत्तापूर्ण जीवन की संभावनाओं में वृद्धि करने वाली शिक्षा है। जनसंख्या शिक्षा का संबंध न केवल जनसंख्या जागरूकता से है बल्कि मूल्यों और उचित दृष्टिकोण को विकसित करने से भी है। जनसंख्या शिक्षा का उद्देश्य लोगों को जनसंख्या की सभी समस्याओं के बारे में जागरूक करना और जनसंख्या की समस्याओं का प्रभावी ढंग से समाधान करने में सहायता प्रदान करना है।

विण्डरमैन के अनुसार, "जनसंख्या शिक्षा एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा शिक्षक बालकों को जनसंख्या प्रक्रिया की प्रकृति एवं अर्थ, जनसंख्या की विशेषताओं, जनसंख्या में वृद्धि के कारण एवं परिणाम तथा इन जनसंख्या की वृद्धि एवं परिवर्तनों का अपने परिवार, अपने समाज, राष्ट्र तथा विश्व पर पड़ने वाले विपरीत प्रभावों के संबंध में जानकारी दी जाती है।"

वर्तमान में निरंतर बढ़ती विश्व जनसंख्या आज पृथ्वी पर प्रत्येक विचारवान व्यक्ति की समस्या का कारण बनती जा रही है। क्योंकि जनसंख्या वृद्धि कहीं पर परोक्ष तो कहीं प्रत्यक्ष रूप से अनेक समस्याओं को जन्म देती है। जनसंख्या वृद्धि का जीवन की गुणवत्ता तथा जीवन स्तर पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। जनसंख्या वृद्धि न केवल व्यक्ति व परिवार को वरन् देश, राष्ट्र, विश्व एवं संपूर्ण ब्रह्मांड को भी हानि पहुंचती हैं। यदि उपलब्ध संसाधनों की तुलना में जनसंख्या वृद्धि अधिक हो जाती है तो उससे अनेक समस्याएं जन्म लेने लगती है। **(जनसंख्या शिक्षा, ई-संस्करण 2023-24)** जनसंख्या में हो रही निरंतर वृद्धि का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि वर्ष 1930 से लेकर वर्ष 2000 के महज 70 वर्षों में विश्व की कुल जनसंख्या में तीन गुनी वृद्धि का रिकॉर्ड दर्ज किया गया था। भारत के संदर्भ में यह गति विश्व की गति से कहीं ज्यादा है। भारत में लगभग 1 करोड़ 60 लाख लोगों की वृद्धि प्रति वर्ष होती है। भारत की 10 वर्ष की वृद्धि दर (1991 से 2001) 21.13 प्रतिशत है। भारत में प्रतिवर्ष लगभग एक ऑस्ट्रेलिया जितनी जनसंख्या बढ़ जाती है। यह वृद्धि देश के लिए निकट भविष्य में कितनी घातक सिद्ध होगी। इसका अंदाजा इनकी जरूरतों को पूरा करने के लिए 1.37 लाख प्राथमिक एवं माध्यमिक

विद्यालय 10 हजार हायर सेकेंडरी स्कूल, 60 लाख प्राथमिक एवं माध्यमिक स्कूल शिक्षकों, 1.5 लाख हायर सेकेंडरी शिक्षकों, 4100 अस्पतालों, 1550 प्राथमिक चिकित्सा केंद्र, अस्पतालों में मरीजों के लिए 2 लाख पलंग, 66 हजार डॉक्टर, 27 हजार नर्सो, 22 लाख मीटरी टन अनाज, 26000 लाख मीटर कपड़ा तथा 2.60 करोड़ मकान की आवश्यकता होगी। यह अनुमान आगे आने वाले समय में भयावाह हो सकता है। किसी भी देश की तरक्की में यह आंकड़ा रोड़ा भटकाने के लिए काफी है (1)। अनेक शिक्षाशास्त्रियों का भी मानना है कि जनसंख्या शिक्षा के प्रति युवाओं को जागरुक कर उनमें सकारात्मक मनोवृत्ति को विकसित किया जाए जिससे जनसंख्या वृद्धि पर अंकुश लगाया जा सके। **सिंह, डॉ. मधुरिमा (2012)** ने अध्ययन के निष्कर्ष में बताया कि शिक्षित महिलाएं अशिक्षित महिलाओं की तुलना में जनसंख्या विस्फोट के प्रति काफी बेहतर अभिवृत्ति रखती हैं(2)। **अहमद, मु. फैजान (2014)** ने जनपद मुरादाबाद के मदरसा शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा, परिवार नियोजन की महत्ता तथा पर्यावरण जागरूकता के प्रति प्रतिक्रिया-एक अध्ययन का अध्ययन किया। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष में बताया कि जनपद मुरादाबाद के मदरसा शिक्षकों की लिंग तथा शिक्षा के आधार पर जनसंख्या शिक्षा के प्रति प्रतिक्रिया में कोई सार्थक अंतर नहीं है। शिक्षकों की आयु तथा क्षेत्र के आधार पर जनसंख्या शिक्षा के प्रति प्रतिक्रिया में सार्थक अंतर है। शिक्षकों की लिंग के आधार पर परिवार नियोजन की महत्ता के प्रति सार्थक अंतर नहीं है। शिक्षकों की शिक्षा, आयु तथा क्षेत्र के आधार पर परिवार नियोजन की महत्ता के प्रति प्रतिक्रिया में सार्थक अंतर है। शिक्षकों की लिंग, शिक्षा एवं आयु के आधार पर पर्यावरण जागरूकता के प्रति प्रतिक्रिया में सार्थक अंतर है। शिक्षकों की क्षेत्र के आधार पर पर्यावरण जागरूकता के प्रति प्रतिक्रिया में कोई सार्थक अंतर नहीं है (3)**। विजयलक्ष्मी, डॉ. जे**. (2014) ने अध्ययन के निष्कर्ष में कहा कि अधिकांश उत्तरदाताओं (59 प्रतिशत) ने प्रति परिवार बच्चों के लिए अधिकांश आवश्यक संख्या के रूप में दो बच्चों को प्राथमिकता दी। यह भी देखा गया कि 76 प्रतिशत उत्तरदाताओं में से अधिकांश ने छोटे परिवार (दो बच्चों) को प्राथमिकता दी (4)। **देवी, डॉ चनम सोनिया (2018)** ने बताया कि अधिकांश साक्षर वयस्कों में जनसंख्या और इसकी समस्याओं के बारे में अधिक जागरूकता है। साथ ही अधिकांश अशिक्षित वयस्कों का दृष्टिकोण जनसंख्या शिक्षा के प्रति पूर्णतः जागरूक नहीं था (5)। **सिंह, डॉ. इंदिरा एवं कुमार, डॉ. मुनेंद्र (2018)** ने अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि परिवार नियोजन तथा जन्म नियंत्रण के प्रति पुरुष एवं महिला अभिभावकों की अभिवृत्ति में आर्थिक स्तर (उच्च, निम्न) के आधार पर सार्थक अंतर नहीं है (6)। **शर्मा, गरिमा (2018)** ने बताया कि जनसंख्या शिक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए। स्थिति इतनी गंभीर है कि जमीनी स्तर पर शीघ्र कुछ करने की

जरूरत है। युवा पीढी को जानकारी देने की जरूरत है। नियोजित वयस्क जीवन जीने के लिए उन्हें उचित रूप से शिक्षित करने की आवश्यकता है। एक ऐसा देश, जहां 50 प्रतिशत आबादी 18 साल से कम है, शादी लगभग सार्वभौमिक है, जहां साक्षरता दर सिर्फ 30 प्रतिशत है या जीवन स्तर निम्न है और बेरोजगारी खतरनाक अनुपात में हैं वहां जनसंख्या शिक्षा सर्वाधिक प्रासंगिक प्रतीत होती है (7)। **देवी, डॉ. चनम सोनिया (2019)** अध्ययन के विश्लेषण से पता चला कि समस्या को नियंत्रित करने में विफलता का मुख्य कारण जनसंख्या विस्फोट के मुद्दों के बारे में ज्ञान और जागरूकता की कमी थी (8)। **गड़िया, डॉ. डी. एस. एवं राखी (2019)** ने निष्कर्ष में बताया कि जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर क्षेत्र का सार्थक प्रभाव पड़ता है। शहरी क्षेत्र के व्यक्तियों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति ग्रामीण क्षेत्र के व्यक्तियों की तुलना में उच्च पाई गई थी। जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर सामाजिक, सांस्कृतिक स्तर, आर्थिक स्तर, वस्तुओं एवं सेवाओं पर आधिपत्य, स्वास्थ्य स्तर एवं सामाजिक, आर्थिक स्तर का सार्थक प्रभाव पाया गया था। जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर शैक्षिक स्तर का प्रभाव नहीं पाया गया था (9)। **जयदेवी, डॉ ए. परीत (2020)** ने बताया कि कॉलेज के छात्रों में जनसंख्या शिक्षा के प्रति दृढ़ विश्वास और दृष्टिकोण है छात्राएं छात्रों की तुलना में अधिक जागरूक और अच्छी समझ रखती हैं। इससे जनसंख्या शिक्षा सीखने के प्रति छात्रों के सकारात्मक संज्ञानात्मक और भावात्मक पहलुओं का पता चलता है (10)। **गोगोई, पोपी और गोगोई, सम्प्रीति (2020)** ने बताया कि सभी लोगों में छोटा परिवार रखने और जनसंख्या शिक्षा के महत्व के प्रति अभिवृत्ति सकारात्मक थी। छोटा परिवार और जनसंख्या शिक्षा के महत्व के प्रति शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के लोगों की अभिवृत्ति में कोई अंतर नहीं था (11)। **सिंह, ज्ञानेंद्र वीर एवं सिंह, जितेंद्र कुमार (2022)** ने अध्ययन के निष्कर्ष में बताया कि जनसंख्या शिक्षा के संबंध में ज्ञान पर पुरुष और महिला भावी शिक्षकों के संबंध में महिला भावी शिक्षकों का औसत स्कोर पुरुष भावी शिक्षकों की तुलना में अधिक अनुकूल है। शहरी और ग्रामीण भावी शिक्षकों के संबंध में शिक्षा संबंध में ज्ञान के मामले में शहरी भावी शिक्षकों का औसत स्कोर ग्रामीण भावी शिक्षकों की तुलना में अधिक अनुकूल है। जनसंख्या शिक्षा के संबंध में ज्ञान पर हिंदू और मुस्लिम भावी शिक्षकों के संबंध में हिंदू भावी शिक्षकों का औसत स्कोर मुस्लिम भावी शिक्षकों की तुलना में अधिक है। जनसंख्या से संबंधित मुद्दों और चुनौतियों के संबंध में धर्म और दृष्टिकोण के संबंध में हिंदू भावी शिक्षकों का औसत स्कोर मुस्लिम भावी शिक्षकों की तुलना में अधिक अनुकूल है। जनसंख्या शिक्षा के संबंध में दृष्टिकोण और स्थान के संबंध में शहरी भावी शिक्षकों का औसत स्कोर अधिक अनुकूल है (12)। **बहुगुणा, अलका एवं नौटियाल, ए. के.(2022)** ने माध्यमिक

विद्यालय के शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन (उत्तराखंड के विशेष संदर्भ में) का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि पुरुष और महिला शिक्षकों में जनसंख्या शिक्षा के प्रति जागरूकता का स्तर लगभग समान है तथा अंतर काफी कम पाया गया (13)। **सिंह, लक्ष्मी (2023)** ने बताया कि ग्वालियर जिले के पुरुषों की परिवार नियोजन कार्यक्रम में भागीदारी एवं जागरूकता का प्रतिशत अधिक है। परिवार नियोजन कार्यक्रम से पुरुषों की जीवन शैली में परिवर्तन हो रहा है। परिवार नियोजन कार्यक्रम से उनका व परिवार का स्वास्थ्य पर अनुकूल प्रभाव दृष्टिगोचर होता है तथा युवाओं की सोच में अच्छा परिवर्तन आया है। परिवार नियोजन कार्यक्रम से परिवारों की आर्थिक स्थिति पर अच्छा प्रभाव पड़ा तथा उनको सरकार द्वारा आर्थिक सहायता भी दी गई (14)। **सोनोवाल, मुखियाजीत (2023)** ने बताया कि कॉलेज स्तर पर जनसंख्या शिक्षा का अत्यधिक महत्व है क्योंकि कॉलेज में छात्रों में एक बड़ा हिस्सा बढ़ते वयस्कों का होता है। अध्ययन से पता चला कि जनसंख्या शिक्षा के बारे में जागरूकता के मामले में पुरुष और महिला कॉलेज के छात्रों के बीच अत्यधिक महत्वपूर्ण अंतर है और अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या के बारे में जागरूकता के मामले में ग्रामीण और शहरी कॉलेज के छात्रों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है (15)।

यूनाइटेड नेशन वर्ल्ड पापुलेशन प्रोस्पेक्ट्स के ताजा आंकड़ों के अनुसार भारत चीन को पीछे छोड़कर जनसंख्या की दृष्टि से विश्व में प्रथम स्थान पर है। भारत की जनसंख्या अमेरिका जो दुनिया की तीसरी सबसे अधिक आबादी का घर है से चार गुना अधिक है। यूनाइटेड वर्ल्ड पापुलेशन प्रोस्पेक्ट्स, 2024 की रिपोर्ट के अनुसार भारत की जनसंख्या 145 करोड़ होने का अनुमान है। संयुक्त राष्ट्र संघ के आंकड़ों के अनुसार अप्रैल, 2023 के अंत में भारत ने लगभग 1,425,775,850 की आबादी के साथ दुनिया के सबसे बड़ी आबादी वाले देश चीन को भी पीछे छोड़ दिया था। वर्ष 2023 में समाचार एजेंसी ब्लूमबर्ग की रिपोर्ट के अनुसार, संयुक्त राष्ट्र संघ के विश्व जनसंख्या डैशबोर्ड के अनुसार, भारतीय जनसंख्या 1.428 बिलियन से कुछ अधिक थी। भारत की जनसंख्या 2050 तक 1.7 अरब तक पहुंचने के लिए तैयार है। ऐसा अनुमान है कि सन् 1600 में भारत की कुल जनसंख्या 10 करोड़ थी, जो सन् 1850 तक बढ़कर 15 करोड़ तक ही पहुंच सकी। यहां पहली बार सन् 1872 में की गई जनगणना से ज्ञात हुआ कि भारत की जनसंख्या 22.6 करोड़ हो चुकी है। इसके बाद भी सन् 1881 में पहली बार व्यवस्थित रूप से की जाने वाली जनगणना में भारत की आबादी कुल 23.7 करोड पाई गई। इसी कारण सन् 1881 को ही जनगणना आंकलन के प्राथमिक वर्ष के रूप में देखा जाता है। जनगणना 2011 में यह जनसंख्या 121.02 करोड पार कर गई थी। किसी भी देश के लिए यह विकराल रूप से

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

बढ़ती जनसंख्या अनके प्रकार की समस्याओं को उत्पन्न करती है और देश के सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक विकास में बाधा उत्पन्न करती है।

भारत जैसे विकासशील देश में प्रत्येक समस्या आवश्यक रूप से जनसंख्या समस्या से संबंधित है। भोज्य पदार्थों की समस्या, आवास की समस्या, वस्त्र आपूर्ति की समस्या, स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सेवाओं संबंधी समस्याएं, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की उपलब्धता की समस्या, पर्यावरण प्रदूषण की समस्या आदि अनेक समस्याएं तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या का ही परिणाम है। यही नहीं भारत में भुखमरी, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, कालाबाजारी, निर्धनता, निरक्षरता एवं पारिस्थितिकीय असंतुलन की समस्याओं ने भी मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित किया है। निरंतर बढ़ती जनसंख्या के कारण देश में सीमित प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। औद्योगीकरण, नगरीकरण, कृषि के विस्तार एवं विकास, यातायात एवं संचार के साधनों में वृद्धि आदि सभी जनसंख्या के निरंतर वृद्धि के ही परिणाम है। जिसके फलस्वरुप पर्यावरण प्रदूषण की विकराल समस्या से आज संपूर्ण विश्व जूझ रहा है। बढ़ती जनसंख्या की बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए, उनके भरण-पोषण के लिए अतिरिक्त खाद्यान्न, आवास, वस्त्र तथा अन्य वस्तुओं की मांग बढ़ती जा रही है। इस बढ़ती हुई जनसंख्या की मांगों की पूर्ति के लिए दुनिया के विभिन्न देशों को अधिक खाद्य पदार्थों की उपज बढ़ाने के लिए विवश कर रही है, फलस्वरुप जंगलों की कटान जारी है, कृषि की पैदावार बढ़ाने के लिए रासायनिक खादों का अत्यधिक प्रयोग किया जा रहा है, जिसके कारण भूमि प्रदूषित होती जा रही है। नित नए कारखानों की स्थापना हो रही है जिनसे निकालने वाली विषैली गैसे एवं अपशिष्ट पदार्थ पृथ्वी पर जीवन के लिए अत्यधिक हानिकारक है। जल प्रदूषण के कारण जलीय जीवों तथा मनुष्य के लिए शुद्ध पानी की उपलब्धता की समस्या उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है। यही नहीं जनसंख्या वृद्धि के कारण यातायात एवं संचार के साधनों में भी द्रुत गति से वृद्धि हुई है जिसके कारण ऊर्जा के प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन हो रहा है और ध्वनि एवं वायु प्रदूषण की समस्या निरंतर बढ़ती जा रही है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि पृथ्वी पर बढ़ती जनसंख्या पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है जिसके कारण पारिस्थितिकी संतुलन बिगड़ रहा है जो पृथ्वी पर विनाश की परिस्थितियों को जन्म दे रहा है। प्रसिद्ध दार्शनिक **अरस्तू** ने जीवन की गुणवत्ता पर जनसंख्या की वृद्धि के कुप्रभाव के संबंध में कहा था, **"यदि हमें अपना भविष्य सुरक्षित रखना है और सभ्यता एवं संस्कृति की रक्षा करनी है तो देश की आबादी को सीमित और सुरक्षित रखना परम आवश्यक है (16)।''**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 और इसकी कार्य योजना 1992 में कहा गया था कि 21वीं शताब्दी के आगमन से पहले 14 वर्ष की आयु तक के सभी बच्चों को अच्छे स्तर की निःशुल्क शिक्षा प्रदान की जाएगी। **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020** में भी कहा गया है कि भारत द्वारा 2015 में अपनाए गए सतत विकास एजेंडा 2030 के लक्ष्य 4 (एसडीजी 4) में वर्णित वैश्विक शिक्षा विकास एजेंडा के अनुसार विश्व में 2030 तक "सभी के लिए समावेशी और समान गुणवत्तायुक्त शिक्षा सुनिश्चित करने और जीवन-पर्यत शिक्षा के अवसरों को बढ़ावा दिए जाने" का लक्ष्य है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रारंभिक बाल्यावस्था विकास, देखभाल के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के सार्वभौमिक प्रावधान के लिए वर्ष 2030 से पूर्व तथा प्राथमिक विद्यालयों में सार्वभौमिक मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान को वर्ष 2025 तक प्राप्त करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इसके साथ ही 2030 तक प्री स्कूल से माध्यमिक स्तर में 100 प्रतिशत सकल नामांकन अनुपात प्राप्त करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है (17)। उपरोक्त लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए भारत में केंद्र तथा राज्य स्तर पर सरकार द्वारा अनेक प्रभावी तथा महत्वपूर्ण प्रयास किये गए और वर्तमान में भी उचित कदम उठाए जा रहे हैं। जिसके फलस्वरुप शिक्षा के क्षेत्र में काफी सुधार हुआ है और विद्यालयों में छात्रों के नामांकन एवं संसाधनों में भी वृद्धि हुई है। लेकिन अभी भी अनेक विद्यालयों में आवश्यक संसाधनों का अभाव है। निःशुल्क एवं अनिवार्य सार्वभौमिक शिक्षा का लक्ष्य प्राप्त नहीं हो पाया है। जिस गति से आज भारतीय जनसंख्या बढ़ रही है उस हिसाब से शत प्रतिशत नामांकन एवं गुणवत्तापूर्ण सार्वभौमिक शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त कर पाना नामुमकिन है। अतः यह कहना युक्तिसंगत है कि यदि देश में जनसंख्या वृद्धि की दर पर नियंत्रण स्थापित करना है तो हमें देश के हर व्यक्ति को शिक्षित करना होगा, जागरूक करना होगा और उन्हें मनोवैज्ञानिक रूप से तैयार करना होगा। छात्रों को विद्यालय स्तर से ही जनसंख्या शिक्षा का ज्ञान उनके परिपक्व होने से पूर्व दिया जाए। जिससे वह यह समझ सके कि उच्च जीवन स्तर तथा जीवन का संपूर्ण सुख और समृद्धि तभी संभव है जब उनका परिवार सीमित होगा और जनसंख्या नियंत्रित होगी। यही छात्र जनसंख्या शिक्षा के प्रति जागरूक हो भविष्य में परिवार नियंत्रित करने संबंधी उचित और सही निर्णय ले सकेंगे और परिवार का आकार सीमित रखने में सजग होंगे। इसीलिए शोधार्थिनी द्वारा महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत छात्राध्यापकों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति जागरूकता के संदर्भ में अध्ययन करने की आवश्यकता अनुभव की गई। क्योंकि महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत छात्राध्यापक हमारे देश के भावी शिक्षक होंगें। शिक्षक भावी पीढ़ियों को शिक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यही भावी शिक्षक जनसंख्या संबंधी मुद्दों और चुनौतियों के बारे में विद्यालयीय छात्र-छात्राओं को जागरूक करेंगें। छात्रों को

जनसंख्या वृद्धि और जनसंख्या विस्फोट का उनके परिवार, देश, तथा विश्व पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों के बारे में सुझाव भी देंगें। अतः यह आवश्यक है कि महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत छात्राध्यापकों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति जागरूकता को ज्ञात किया जाए।

निष्कर्ष

उपरोक्त वर्णित अध्ययनों की समीक्षा के आधार पर कहा जा सकता है कि अधिकांशतः अध्ययनों में जनसंख्या शिक्षा की आवश्कता पर प्रकाश डाला गया है। वर्ष 2012 से 2023 तक विगत वर्षों के मध्य जनसंख्या शिक्षा विषय पर विभिन्न स्तरों पर अनेक शोध कार्य किए गए। अधिकांशतः शोधकर्ताओं द्वारा जनसंख्या शिक्षा, परिवार नियोजन कार्यक्रम एवं लघु परिवार के प्रति जागरूकता और अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया है। परंतु महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत छात्राध्यापकों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति जागरूकता के संदर्भ में कोई विशेष शोध कार्य नहीं किया गया है। जनसंख्या शिक्षा के प्रति लोगों में जागरूकता व उचित दृष्टिकोण पाया गया है। कुछ अध्ययनों में यह भी देखा गया है कि जनसंख्या वृद्धि का मुख्य कारण लोगों में जनसंख्या संबंधी मुद्दों के प्रति जागरूकता का आभाव था। आज भारत में जनसंख्या की स्थिति अत्यंत चिंताजनक है। जनसंख्या वृद्धि के कारण उत्पन्न भोज्य पदार्थों की कमी, आवास की समस्या, बेरोजगारी, खराब स्वास्थ्य, भूमि पर दवाब, जीवन स्तर व मूल्यों में गिरावट, पारिस्थितिकी असंतुलन तथा पर्यावरण प्रदूषण जैसी समस्याएं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रही है। इन समस्याओं को कम करने के लिए तत्काल कोई उचित समाधान निकालना होगा तभी विकसित एवं आत्मनिर्भर भारत, स्वच्छ एवं स्वस्थ भारत का सपना साकार हो सकेगा तथा गुणवत्तापूर्ण सार्वभौमिक शिक्षा तक सबकी पहुंच हो सकेगी। जनसंख्या शिक्षा जनसंख्या संबंधी सभी समस्याओं के बारे में जागरूक करने तथा उनका प्रभावी ढंग से समाधान करने में सहायता प्रदान करती है। जनसंख्या शिक्षा जीवन स्तर को उच्च बनाने तथा सुखी एवं गुणवत्तापूर्ण जीवन की संभावनाओं में वृद्धि करने वाली शिक्षा है। यदि देश की जनसंख्या में संतुलन लाना है तो हमें देश के हर व्यक्ति को शिक्षित करना होगा, जागरूक करना होगा, निर्धनता को दूर करना होगा और उन्हें मनोवैज्ञानिक रूप से तैयार करना होगा। इस प्रकार कहा जा सकता है कि महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत छात्राध्यापकों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति जागरूकता को ज्ञात करने के लिए विशाल स्तर पर शोध कार्यों को किया जाए और तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या को नियंत्रित करने के लिए जनसंख्या शिक्षा का प्रसार किया जा जाए। जिससे प्रत्येक नागरिक को जागरूक कर उनमें सकारात्मक संचेतना को विकासत किया जा सके।

संदर्भ

1. जनसंख्या शिक्षा, (ई- संस्करण 2023-24) एम. ए. एजुकेशन 2 - 26 दूरवर्ती अध्ययन एवं सतत् शिक्षा केंद्र महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट (सतना) मध्य प्रदेश।
2. Singh, Dr. M. (2012). Attitude of Women Towards Population Explosion. Shodh Sanchayan, An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research, 3(2), 1-4. www.shodh.net
3. अहमद, मु. एफ. (2014**).**जनपद मुरादाबाद के मदरसा शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा, परिवार नियोजन की महत्ता तथा पर्यावरण जागरूकता के प्रति प्रतिक्रिया-एक अध्ययन. (पी-एच.डी. शोध प्रबंध) शिक्षा संकाय, हिंदू कॉलेज मुरादाबाद.
4. Vijayalakshmi, Dr. J. (2014**).** A Study on Attitude towards Family Size Preferences. The International Journal Of Humanities & Social Studies, 2(5), 168-171. www.theijhss.com
5. Devi, Dr. C. S. (2018). Attitude Of Adult Learners Towards Population Education. International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI), 7(10), 47-50. www.ijhssi.org
6. सिंह, डॉ. इंदिरा एवं कुमार, डॉ. एम. (2018). परिवार नियोजन तथा जन्म नियंत्रण के प्रति अभिभावकों की अभिवृत्ति का आर्थिक स्तर के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन.UNIVERSAL RESEARCH REPORTS, REFEREED, PEER REVIEWED, 5(4), 245-252. ISSN : 2348 - 5612.
7. Sharma, G. (2018). Population Education in India: A Perspective.IJRDO-Journal of Educational Research, 3(4), 11-20. ISSN: 2456-2947.
8. Devi, Dr. C. S. (2019). Awareness of Population Explosion Issues on Female Adult. International Journal of Reviews and Research in Social Sciences, 7(2), 305-308. www.anvpublication.org
9. गडिया, डॉ. डी. एस. एवं राखी (2019). जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन. Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (JETIR), 6(6), 1015-1026. www.jetir.org
10. Jaydevi, Dr. A. P. (2020). COGNITIVE AND EMOTIVE ASPECTS OF LEARNING POPULATION EDUCATION AMONG STUDENTS IN CHENNAI. ©International Journal of Research - GRANTHAALAYAH, 8(2), 168-175.
11. Gogoi, P. & Gogoi, S. (2020). Attitude towards small family and population education in Jorhat district.International Journal of Education & Management, 10(2), 128-130.
12. Singh, G. V. & Singh, J. K. (2022). A Study on Knowledge and Attitude of Prospective Teachers towards Population Education. International Journal of Scientific Development and Research (IJSDR), 7(10), 681-686. www.ijsdr.org

13. बहुगुणा, अलका एवं नौटियाल, ए. के. (2022). माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन (उत्तराखंड के विशेष संदर्भ में). Shrinkhala ek shodhparakvaicharik Patrika, 9,7, RNI No. UPBIL/2013/55327
14. सिंह, लक्ष्मी (2023). परिवार नियोजन कार्यक्रम के प्रति पुरुषों में जागरूकता: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (ग्वालियर जिले के संदर्भ में), पी-एच.डी. उपाधि हेतु शोध प्रबंध, शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई कला एवं वाणिज्य उत्कृष्ट महाविद्यालय, ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
15. Sonowal, M. (2023). Awareness of Population Education Among the College Students of Lakhimpur District, Assam. A Journal for New Zealand Herpetology, 12(04), 26-29. ISSN NO: 2230-5807.
16. मलैया, के. सी. एवं शर्मा, आर. (2013). जनसंख्या शिक्षा. अग्रवाल पब्लिकेशंस, आगरा-2.
17. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020), मानव संसाधन विकास मंत्रालय(शिक्षा मंत्रालय), भारत सरकार.
18. https://shodhganga.inflibnet.ac.in
19. https://www.wikipidia.org
20. https://www.academia.edu